“मत डर”
(18:1-11)

क्या आपको कभी डर लगा है ? जीवन में हम सब कभी न कभी, कहीं न कहीं अवश्य डरते हैं, कई तो आमतौर पर डरते ही रहते हैं। स्कूल के बच्चों को डर होता है कि वे परीक्षा में फेल न हो जाएं। कर्मचारियों को डर रहता है कि कहीं उनकी छंटनी न हो जाए। नव-विवाहितों को डर होता है कि उनका प्रेम वैसा ही नहीं रहेगा। हज़ारों लोगों को अपने अतीत की गुप्त बातों के न बदलने का, असुरक्षित वर्तमान का, और अनिश्चित भविष्य का डर रहता है।

डर मनुष्य के जीवन का एक अहम हिस्सा बन गया है। यदि संदेह हो, तो अपनी बाइबल उठाइए और वहां “भय” और “डर” शब्द देखिये। केवल उत्पत्ति की पुस्तक में ही, आप देखेंगे कि कहीं न कहीं, बाइबल का हर मुख्य पात्र डरा, वह चाहे आदम हो या ईब्राहीम, सारा, लूत, इसहाक, याकूब हों या याकूब के पुत्र (उत्पत्ति 3:10; 15:1; 18:15; 19:30; 20:11; 26:7; 31:31; 43:18)। लेकिन, मैं यह भी बताना चाहता हूं कि *डरना* तो स्वाभाविक है, परन्तु डर-डर कर *जीना* स्वाभाविक नहीं है।

इस पाठ में, हम देखेंगे कि हठी प्रेरित पौलुस भी डर से घबरा गया था। हम यह भी देखेंगे कि प्रभु ने कैसे उस डर पर विजय पाने में उसकी सहायता की और कैसे प्रभु हमारे डर को निकालने में सहायता कर सकता है।

पौलुस अथेने में प्रचार कर रहा था, जो संसार का शिक्षा और संस्कृति का केन्द्र था। अध्याय 18 इस जानकारी के साथ आरम्भ होता है: “इस के बाद पौलुस अथेने को छोड़कर कुरिन्थुस में आया।”[1] कुरिन्थुस वहां से पश्चिम की ओर लगभग चालीस मील दूर था, परन्तु पौलुस तो किसी अन्य देश में जा रहा था। अथेने एक छोटा सा विश्वविद्यालयीय नगर था जबकि कुरिन्थुस संसार के व्यापारिक केन्द्रों में से एक था।[2] अथेने के लोग बुद्धि और दार्शनिकता के चक्कर में थे जबकि कुरिन्थुस के लोग कामुकता में फंसे हुए थे। अथेने के लोग सच्चाई को खोजने का दावा करते थे जबकि कुरिन्थुस के लोग बेशर्मी से भोग-विलास के पीछे पड़े हुए थे।

पौलुस को एक कठिनाई थी (18:1, 9)

प्रेरितों 18:1-18 में कुरिन्थुस में पौलुस के आरम्भिक काम के बारे में पढ़ने से पता

चलता है कि वहां उसे विजय पर विजय मिल रही थी। हम मान लेंगे कि पौलुस आनन्द और विश्वास से भरा हुआ था। इसलिए, आयत 9 हमें चौंका देती है, जब हम पढ़ते हैं कि प्रभु ने पौलुस को इस संदेश के साथ दर्शन दिया कि ''मत डर।'' ''मत डर''? हम पुकार उठते हैं, ''लेकिन हमें तो पता ही नहीं चला कि वह डरा कब था।'' परन्तु, सच्चाई यह है, कि पौलुस कुरिन्थुस के महानगर में प्रवेश करने पर भय और आशंका से पीड़ित था।

हमें कुरिन्थुस में पौलुस के प्रचार की सेवकाई के दौरान उसकी बातचीत से इसका पता चलता है, उसने लिखने की अपनी सेवकाई का आरम्भ गम्भीर होकर किया।[3] इस कारण लूका द्वारा आरम्भ किए वृत्तांत और छोड़े गए खाली स्थान को पूरा करने के लिए, हमारे पास उसकी पत्रियां हैं।[4] कुरिन्थुस के मसीही लोगों के नाम पत्र में, पौलुस ने उनके नगर में प्रवेश के समय अपनी मनोस्थिति के बारे में बताया:

> और हे भाइयो, जब मैं परमेश्वर का भेद सुनाता हुआ तुम्हारे पास आया, तो वचन या ज्ञान की उत्तमता के साथ नहीं आया। ... और मैं निर्बलता और भय के साथ और बहुत थरथराता हुआ तुम्हारे साथ रहा (1 कुरिन्थियों 2:1-3)।

पौलुस ''निर्बलता और भय के साथ बहुत थरथराता हुआ'' कुरिन्थुस में क्यों आया? थोड़ा-बहुत मनुष्य के मन और पौलुस की परिस्थिति को जानते हुए, हम कुछ अनुमान लगा सकते हैं।

बेचैन करने वाला अतीत

हम में से बहुतों की तरह पौलुस के मन में सम्भवत: *अतीत* से जुड़ी बातें रही होंगी। बेशक अथेने में थोड़े से लोगों द्वारा सुसमाचार को ग्रहण करने की बात ने उसे बेचैन कर दिया। थोड़ी देर वहां रहने के बाद वह अथेने से चला गया, इसलिए नहीं कि उसे जाना था, बल्कि इसलिए कि उसने जाने की इच्छा की। (यूनान में अथेने पहला शहर था जहां पौलुस को नगर छोड़ने के लिए मजबूर नहीं किया गया था!) स्पष्ट है कि उसे लगा होगा कि अथेने के दार्शनिकों के बीच वह कुछ नहीं कर पाएगा।

फिर, फिलिप्पी, थिस्सलुनीके, और बिरीया में स्थापित अनुभवहीन कलीसियाओं की आस्था का बोझ भी उसके मन में था (2 कुरिन्थियों 11:28)। विशेषकर उसकी चिन्ता थिस्सलुनीके के नये मसीहियों के बारे में थी। उसे डर था ''कि कहीं ऐसा न हो, कि परीक्षा करने वाले ने [उनकी] परीक्षा की हो और हमारा परिश्रम व्यर्थ हो गया हो'' (1 थिस्सलुनीकियों 3:5)।

अनिश्चित वर्तमान

जैसे हम आमतौर पर करते हैं, पौलुस ने सम्भवत: जो *हो रहा* था उसे होने दिया। वह स्वयं तो दूसरों के उत्साह को बढ़ाता था, फिर भी अकेला था। यदि उसकी बिनती

मानकर सीलास और तीमुथियुस अथेने में उसके साथ मिल गए थे, तो उसने उन्हें तुरन्त मकिदुनिया में भेज दिया होगा।[5] इस प्रकार वह अकेला, लगभग पांच लाख लोगों के नगर में अजनबी था।[6] फिर, शायद कुरिन्थुस में प्रवेश के समय पौलुस के पास कोई पैसा भी नहीं था। इससे भी बड़ी बात, यह भी सम्भव है कि डॉक्टर लूका की अनुपस्थिति में, जब पौलुस कुरिन्थुस में आया तो वह बीमार था (1 कुरिन्थियों 2:3 में ''निर्बलता'' शब्द उसकी शारीरिक स्थिति के बारे में हो सकता है)। 2 कुरिन्थियों 12:7 में पौलुस ने अपने ''शरीर में एक कांटे'' की बात इस प्रकार की जैसे कुरिन्थुस के लोगों को पता ही था। गरीबी और बीमारी के साथ अकेलापन तगड़े से तगड़े आदमी को भी भयभीत कर सकता है।

पौलुस को किसी हद तक कुरिन्थुस ने भी डराया था। शहर बहुत धनी और पूरी तरह भ्रष्ट था। व्यापारिक दृष्टि से, कुरिन्थुस एक आदर्श नगर था। यह शेष यूनान के साथ लगते पेलपोनेसियन प्रायद्वीप को यूनान से मिलाने वाले तंग इस्थमुस[7] पर स्थित था, ''जहां समुद्र यूनान को लगभग दो भागों में बांटता था।'' पूर्व-पश्चिम का सारा यातायात कुरिन्थुस से होकर ही जाता था। और, ख़तरनाक समुद्री परिस्थितियों के कारण उत्तर-दक्षिण का अधिकतर व्यापार कुरिन्थुस से ही होता था। प्रायद्वीप के छोर में मलया अन्तरीप था। नाविकों में कहावत थी, ''जो कोई मलया अन्तरीप में जाना चाहता है वह अपनी इच्छा से जाता है तो जाए।'' तूफानी मलया से घूम कर दो सौ मील की यात्रा कम करने के लिए रोम से आने वाले अधिकतर जहाज़ लिकेयुम (कुरिन्थुस के उत्तर में) आकर ठहरते; वहां वे किंख्रिया[8] (कुरिन्थुस के उत्तर में एक-दूसरे) से बन्दरगाह की ओर इस्थमुस से कुछ मील आगे अपना सामान उतारते और चढ़ाते थे, जहां से सामान जहाज़ में लादा व उतारा जाता था।[9] (छोटे जहाज़ पूरी तरह भरकर लकड़ी के बने एक विशेष मार्ग पर खींच कर इस्थमुस के पार ले जाए जाते थे।)[10] इस प्रकार कुरिन्थुस से संसार का व्यापार चलता था।

परन्तु कुरिन्थुस अपने व्यापारिक उद्यम के कारण विश्व प्रसिद्ध नहीं था। बल्कि, यह उस स्थान के कारण प्रसिद्ध था, जहां से संसार के दृष्टिकोण से ''अच्छा समय'' आता था। नगर में प्रेम की तथाकथित देवी,[11] अफ्रोदित के मन्दिर से सुसज्जित अक्रो-कुरिन्थ था।[12] बाइबल के बाहर के इतिहासकार मन्दिर में सेवा करने वाली एक हजार पुजारिनों (अर्थात धार्मिक वेश्याओं) के बारे में बताते हैं, जो अपना धंधा रात को पहाड़ के नीचे शहर की गलियों में ले आती थीं।[13] कुरिन्थुस ने आज की अंग्रेजी भाषा में संदेहास्पद योगदान दिया: अंग्रेज़ी में ''Corinthianize'' होने का अर्थ व्यभिचार करना और एक ''Corinthian girl'' का अर्थ एक वेश्या था।[14]

कुरिन्थुस को देखने पर, पौलुस इसकी कामुकता, मूर्तिपूजा,[15] और बौद्धिक घमण्ड[16] से अति प्रभावित हुआ होगा। कुरिन्थियों के नाम लिखे पौलुस के पहले पत्र में इस नगर की भयभीत करने वाली चुनौती देखी जा सकती है:

> क्या तुम नहीं जानते, कि अन्यायी लोग परमेश्वर के राज्य के वारिस न होंगे? धोखा न खाओ, न वेश्यागामी, न मूर्तिपूजक, न परस्त्रीगामी, न लुच्चे, न पुरुषगामी, न चोर,

न लोभी, न पियक्कड़, न गाली देने वाले, न अन्धेर करने वाले, परमेश्वर के राज्य के वारिस होंगे। *और तुम में से कितने ही ऐसे थे ...* (1 कुरिन्थियों 6:9-11)।

आत्मिक रूप से यदि अथेने बांझ भूमि था, तो कुरिन्थुस सूर्य की तपश से जले हुए रेगिस्तान जैसा दिखाई देता होगा।

हम में से बहुत से लोग अपने आपको पौलुस के साथ मिला सकते हैं। जीवन में कहीं न कहीं, हमें भी ऐसी चुनौतियों का सामना करना पड़ता है जो असम्भव दिखाई देती हैं। मुझे अभी भी सिडनी हार्बर ब्रिज के किनारे से ऑस्ट्रेलिया के सिडनी शहर को देखने की बात पर आश्चर्य होता है कि श्रमिकों के छोटे से समूह का इतने बड़े शहर पर कितना असर हो सकता है।

अवांछनीय सम्भावनाएं

अन्त में, जैसे कभी-कभी हमें लगता है, पौलुस की दिलचस्पी *भविष्य* के बारे में होगी। कुरिन्थुस की व्यापारिक सफलता ने यहूदियों की काफी संख्या को आकर्षित कर लिया था। इसका अर्थ यह था कि नगर में एक आराधनालय था जहां से पौलुस अपना काम आरम्भ कर सकता था, परन्तु इसका अर्थ यह भी था कि थोड़े ही आगे मुश्किल भी है। पौलुस के काम करने का एक आधारभूत ढंग बन गया था: (1) आरम्भ में उसे सफलता मिलेगी; (2) फिर ज़बरदस्त विरोध होगा; (3) उसके साथ दुर्व्यवहार होगा। दूसरे नगरों में उसे पीटा गया था, पथराव किया गया था, कैद में डाला गया था, और नगर को छोड़ने के लिए मजबूर किया गया था। आदमी कितना भी शक्तिशाली क्यों न हो बार-बार विरोध होने पर, उस पर प्रभाव पड़ ही जाता है।

परमेश्वर के पास समाधान थे
(18:2-11)

जब पौलुस ''निर्बलता और भय के साथ, और बहुत थरथराता'' था, तो परमेश्वर ने उसे छोड़ा नहीं। पौलुस ने प्रभु को ''शान्ति का परमेश्वर; ... [जो]हमारे सब कलेशों में शान्ति दिखाता है'' कहा (2 कुरिन्थियों 1:3, 4)। अन्य अवसरों के अलावा, उसके दिमाग में सम्भवत: यह विचार भी था कि उसके कुरिन्थुस में रहते समय परमेश्वर ने उसे कैसे तसल्ली दी थी। उसके मन में सम्भवत: यह विचार भी था कि कुरिन्थुस में आने पर परमेश्वर ने कैसे उसे दिलेरी दी थी। परमेश्वर हमारे प्राणों पर न केवल सूर्य ही चमकाता है, बल्कि जब हम अकेले और निराश होते हैं और हमारा मोहभंग हो जाता है तब भी परमेश्वर हमें नहीं छोड़ता, वह हमारे साथ रहता है।

परमेश्वर ने पौलुस के लिए क्या किया ? हमारे पाठ के अनुसार, परमेश्वर ने अपने पूर्वप्रबन्ध के द्वारा वह सब कुछ किया जो पौलुस का भय मिटाने के लिए आवश्यक था।

स्थाई सम्बन्ध (पद 2, 3)

पहले, परमेश्वर ने पौलुस को पक्के तौर पर साथी दिये। जब भय हमें निगलने की धमकी देता है तो मित्रता हमें दृढ़ कर सकती है:

> और वहां अक्विला[17] नामक एक यहूदी[18] मिला, जिस का जन्म पुन्तुस[19] का था; और अपनी पत्नी प्रिस्किल्ला समेत इतालिया से नया आया था, क्योंकि क्लौदियुस[20] ने सब यहूदियों को रोम से निकल जाने की आज्ञा दी थी, सो वह उनके यहां गया। और उसका और उनका एक ही उद्यम था; इसलिए वह उन के साथ रहा (आयतें 2, 3क)।

बाइबल से बाहर के लेखक 49 ईस्वी के आस-पास रोम से यहूदियों के राजकीय निर्वासन के बारे में बताते हैं।[21] बहुत से विद्वान इस तथ्य को सियुतोनियास के कथन से जोड़ते हैं कि क्लौदियुस ने यहूदियों को इसलिए निकाला क्योंकि वे ''ख्रिस्तुस के उकसाने से निरन्तर दंगों में लिप्त थे।'' यह सम्भवत: यहूदियों और मसीहियों में मसीह के प्रचार में झगड़े की बात है।[22] रोमी लोग मसीहियत को यहूदी धर्म का एक रूप मानते थे, इसलिए यहूदियों के साथ-साथ मसीहियों को भी निकाल दिया गया होगा।[23]

हम यह नहीं जानते कि पौलुस से मिलकर अक्विला या प्रिस्किल्ला मसीही बन गए थे या नहीं। लेकिन उन्हें मसीही मानने और न मानने वाले दोनों ही, अपने विचार का आधार लूका की चुप्पी को बनाते हैं: ''यदि वे मसीही नहीं थे, तो लूका ने उनके मसीही बनने के बारे में क्यों नहीं बताया?''; ''यदि वे पहले से ही मसीही थे, तो लूका ने अक्विला को यहूदी कहने के बजाय मसीही क्यों नहीं कहा?'' यह तथ्य कि लूका ने उनका नाम उनमें शामिल नहीं किया जिन्होंने कुरिन्थुस में उसके आरम्भिक दिनों में बपतिस्मा लिया था (1 कुरिन्थियों 1:14-16) सम्भवत: उनके पक्ष में तर्क देता है जो यह मानते हैं कि पौलुस से मिलने के समय वे मसीही थे।[24] यदि वे पौलुस से पहली बार मिलने के समय मसीही नहीं थे, तो निस्संदेह इस प्रेरित के साथ उनका रोज़ मिलना उन्हें कायल करने के लिए काफ़ी था कि यीशु ही मसीह है।

वचन में लिखा है कि अक्विला पौलुस को ''मिला''; हम नहीं जानते कि यह सब कैसे हुआ। यह सुझाव दिया गया है कि एक ही बिरादरी (समाज)[25] के लोग आराधनालय में इकट्ठे बैठते थे और पौलुस को अक्विला वहीं पर मिला था। शायद, परमेश्वर के पूर्वप्रबन्ध के अनुसार, पौलुस ने अक्विला और प्रिस्किल्ला की दुकान पर कुछ काम करने के लिए पूछा। वह उनसे कैसे भी मिला हो, लेकिन वे जीवन भर के लिए मित्र बन गए। बाद में उसने उनके बारे में लिखा: ''प्रिसका[26] और अक्विला को जो यीशु में मेरे सहकर्मी हैं, नमस्कार। उन्होंने मेरे काम के लिए अपना ही सिर दे रखा था और केवल मैं ही नहीं वरन अन्यजातियों की सारी कलीसियाएं भी उनका धन्यवाद करती हैं'' (रोमियों 16:3, 4)।[27]

स्थाई दिनचर्या (आयतें 2-4)

परमेश्वर ने पौलुस को करने के लिए काम भी दिया। निराशा के समय, अपने आप

को व्यस्त रखना आवश्यक है। दृढ़ निश्चय से काम-काज में लगे रहना भय को कम कर देता है।

पहले, परमेश्वर ने शारीरिक श्रम से पौलुस की मदद की। ''सो वह [अक्विला और प्रिस्किल्ला] के यहां गया। और उसका और उनका एक ही उद्यम था; इसलिए वह उन के साथ रहा और वे काम करने लगे, और उनका उद्यम तम्बू बनाने का था'' (आयतें 2ख, 3)। यहां पहली बार हमें पौलुस के व्यवसाय के बारे में पढ़ने को मिलता है। यद्यपि पौलुस की शिक्षा एक रब्बी के रूप में हुई थी, परन्तु उसे तम्बू बनाने का उद्यम भी सिखाया गया था।[28] पौलुस का गृहक्षेत्र किलिकिया बकरी के बालों से बनने वाले कपड़े के लिए प्रसिद्ध था जो नमी को छितरा देता था और तम्बू बनाने के लिए सही माना जाता था, सो स्वाभाविक था कि उसे तम्बू बनाने का काम सिखाया जाता।[29] ध्यान रहे कि यूनानी शब्द का अनुवाद ''तम्बू बनाने वाले'' का अर्थ ''चमड़े के कारीगर'' भी है। पौलुस कपड़े और चमड़े, दोनों का निपुण कारीगर था।

जब पौलस, कुरिन्थुस में पहली बार आया, तो स्पष्ट है कि उसके लिए शारीरिक श्रम करना उसकी वित्तीय आवश्यकता थी। परन्तु, उसकी आर्थिक स्थिति सुधरने के बाद भी इस आरोप से बचने के लिए कि वह ''कमाई के लिए प्रचार करता था'' (1 कुरिन्थियों 9:11, 12), उसने अपने हाथों से श्रम करना जारी रखा (1 कुरिन्थियों 4:12)।[30]

पौलुस ने अक्विला और प्रिस्किल्ला के साथ न केवल काम किया बल्कि वह उनके घर में रहा भी। शायद उनकी एक दुकान थी जिसके पीछे रहने के लिए जगह थी। यह भी हो सकता है कि उनका घर कुरिन्थुस में कलीसिया के लिए इकट्ठे होने का स्थान बन गया हो।[31]

परमेश्वर ने पौलुस को अपने हाथों से काम के अलावा, उससे भी जरूरी काम अर्थात सुसमाचार सुनाने की सेवकाई को पूरा करने के लिए अवसर प्रदान किया। कुरिन्थुस जैसे बड़े व्यापारिक नगर में अवश्य ही काफी संख्या में यहूदी थे, जिस कारण पौलुस को अपना काम आरम्भ करने के लिए आराधनालय मिल गया। इस कारण लिखा है कि ''वह हर एक सब्त के दिन आराधनालय में [शास्त्रों में से; 17:2] वाद-विवाद करके यहूदियों और यूनानियों को भी समझाता था'' (18:4)। ये ''यूनानी परमेश्वर का भय रखने वाले'' होंगे, जो नगर के अधर्म से दुखी थे और कुछ अच्छे की खोज में थे। आराधनालय में पौलुस के प्रचार की पहली बात सम्भवत: यह थी कि वह ''[शास्त्रों में से] उनका अर्थ खोल-खोलकर समझाता था, कि मसीह को दुख उठाना और मरे हुओं में से जी उठना अवश्य था ...'' (17:3)।

कुरिन्थुस के खण्डहरों में एक प्राचीन आराधनालय के पत्थर की सरदल मिली है, यह शायद उसी आराधनालय की है जिसमें पौलुस ने प्रचार किया था।[32]

उत्साहपूर्वक पुनर्मिलन (आयतें 5-8)

पौलुस को शारीरिक और आत्मिक श्रम के बाद, उसके दो सहकर्मियों के आने से

और उत्साह मिला। दो नये मित्रों से यदि कुछ अच्छा है, तो वह दो पुराने मित्र हैं। लिखा है कि "सीलास और तीमुथियुस मकिदुनिया में आए" (आयत 5क)। अथेने में अकेला रहने पर पौलुस ने मकिदुनिया में "सीलास और तीमुथियुस ..." को ख़बर भेजी कि जितनी जल्दी हो सके, उसके पास आएं (17:15)। पहला थिस्सलुनीकियों 3:1-5 से पता चलता है कि तीमुथियुस पौलुस को अथेने में मिल गया था, परन्तु पौलुस ने उसे तुरन्त थिस्सलुनीके में वहां के मसीहियों को दृढ़ करने और उत्साह देने के लिए वापस भेज दिया।[33] शायद सीलास भी थोड़ी देर के लिए पौलुस से अथेने में फिर से मिला था और उसे वापस फिलिप्पी में भेज दिया गया।[34]

सीलास और तीमुथियुस के कुरिन्थुस में आने से पौलुस को कई प्रकार से फिर से शक्ति प्राप्त हुई। उनकी उपस्थिति ही उसके लिए उत्साह की बात थी। मैं पौलुस, सीलास और तीमुथियुस को प्रिस्किल्ला की खाने की मेज पर ताज़ा खबरें देते, हंसते और खुश होते देख सकता हूं। इसके अलावा, तीमुथियुस थिस्सलुनीके की कलीसिया से अच्छी ख़बर लेकर आया था। पौलुस ने थिस्सलुनीकियों को लिखा, "पर अभी तीमुथियुस ने जो तुम्हारे पास से हमारे यहां आकर तुम्हारे विश्वास और प्रेम का सुसमाचार सुनाया ... हमने अपनी सारी सकेती और कलेश में तुम्हारे विश्वास से तुम्हारे विषय में शान्ति पाई" (1 थिस्सलुनीकियों 3:6, 7)। सीलास और तीमुथियुस फिलिप्पी के मसीहियों की ओर से कुछ भेंट भी लेकर आए थे।[35] पौलुस ने बाद में कुरिन्थियों को लिखा कि "भाइयों[36] ने, मकिदुनिया से आकर मेरी घटी को पूरा किया" (2 कुरिन्थियों 11:9)। इस भेंट से पौलुस के लिए अपने पहले प्यार अर्थात सुसमाचार के प्रचार के लिए पूरा समय देना सम्भव हो गया। "जब सीलास और तीमुथियुस मकिदुनिया से आए, तो पौलुस वचन सुनाने की धुन में" लग गया[37] (आयत 5क)।

स्पष्टतया सीलास और तीमुथियुस के आने से पौलुस आराधनालय में और दिलेरी से प्रचार करने के लिए उत्साहित हुआ। पहले, उसने ज़ोर दिया था कि शास्त्रों के अनुसार मसीह का दुख उठाना, मारा जाना, और जी उठना आवश्यक था। अब इसी बात से वह निष्कर्ष की ओर आने लगा, "वचन की धुन में लगकर यहूदियों को गवाही देता था कि *यीशु* ही मसीह [ख्रिस्तुस] है" (आयत 5ख)।[38]

पौलुस के इस ऐलान से कि यीशु ही मसीह है, यहूदी उसके शत्रु बन गए। "वे [उसका] विरोध और [यीशु के नाम की] निन्दा करने लगे" (आयत 6क)। उनके ऐसा करने पर, पौलुस ने "अपने कपड़े झाड़कर उनसे कहा; तुम्हारा लोहू तुम्हारी ही गर्दन पर रहे: मैं निर्दोष हूं: अब से मैं अन्यजातियों के पास जाऊंगा"[39] (आयत 6ख)। पौलुस के काम और बातों की जड़ पुराने नियम के संकेतों से जुड़ी हुई थी। पहले, पौलुस और बरनबास ने पिसिदिया के अन्ताकिया में यहूदियों के विरुद्ध गवाही देने के लिए अपने पांवों की धूल झाड़ दी थी (13:50, 51); पौलुस द्वारा अपने कपड़े झाड़ने से वही मूल संदेश दिया गया: "तुम ने परमेश्वर को नकार दिया है; इसलिए, तुम्हारे साथ मेरा कोई सम्बन्ध नहीं रहा!"[40]

पौलुस के ये शब्द कि उनका लहू उनकी गर्दनों पर रहे और यह कि वह ''निर्दोष'' था, सीधे यहेजकेल 3 और 33 अध्याय से लिये गये थे। यदि परमेश्वर का दास बुरे आदमी को चेतावनी देने में असफल हो जाए, तो वह आदमी तो अपने पाप में मरेगा ही, परन्तु उसके लहू का हिसाब उससे भी मांगा जाएगा जो उसे चेतावनी देने में नाकाम रहा (यहेजकेल 3:18; 33:8)। दूसरी ओर, यदि परमेश्वर का संदेशवाहक बुरे आदमी को चेतावनी दे दे, तो संदेशवाहक ने अपनी जान बचा ली, बुरा आदमी चाहे अपना मार्ग बदले या नहीं (यहेजकेल 3:19; 33:9)। यदि किसी ने चेतावनी को सुन कर अनदेखा किया तो, ''उसका खून उसी के सिर पड़ेगा'' (यहेजकेल 33:4; यहोशू 2:19 भी देखिये)।

फिर पौलुस आराधनालय से चला गया; परन्तु वह अधिक दूर नहीं गया था, क्योंकि परमेश्वर का भय मानने वाले एक व्यक्ति ने[41] सेवा के लिए इस्तेमाल करने के लिए अपना घर दे दिया, जो कि अगले ही द्वार पर था। हम पढ़ते हैं कि ''वहां से चलकर [पौलुस] तितुस युस्तुस[42] नामक परमेश्वर के एक भक्त के घर आया, जिसका घर आराधनालय से सटा हुआ था'' (आयत 7)।[43] कई लोगों का मानना है कि यह तितुस युस्तुस, गयुस[44] ही था जिसे पौलुस ने अपने हाथों से बपतिस्मा दिया था (1 कुरिन्थियों 1:14), बाद में उसने कुरिन्थुस में पौलुस की पहुनाई की थी (रोमियों 16:23)।

यहूदी आराधनालय के पड़ोस में मसीही प्रार्थना सभा के पूर्वप्रबन्ध में परमेश्वर की योजना का अनुभव करना कठिन लगता है। पौलुस को सुनने में दिलचस्पी रखने वालों ने अपनी सब्त की दिनचर्या को बदला नहीं; आराधनालय में जाने के बजाय, वे पड़ोस के घर में चले गए। पड़ोस के घर के बाहर खड़े सभी रथों को, और तितुस के घर में यीशु की महिमा करते मसीहियों को देखकर यहूदी क्रोधित हो गए, क्योंकि उन्हें तोरा पढ़ने में कठिनाई आ रही होगी!

आनन्दित करने वाले परिणाम

अथेने में बहुत कम लोगों ने सुसमाचार को ग्रहण किया था, परन्तु कुरिन्थुस में शानदार परिणाम मिले थे। (क्या इससे यह संकेत मिलता है कि काम करने की सम्भावना बुद्धिमान लोगों की अपेक्षा अनैतिक लोगों में अधिक है?) बाद में, प्रभु ने कहा था कि कुरिन्थुस में उसके ''बहुत से लोग'' थे (18:10) जिन्होंने पौलुस द्वारा उन्हें सिखाने पर सुसमाचार को ग्रहण करना था। आयत 8 फसल की कटनी के आरम्भ के बारे में बताती है। प्रथम परिवर्तित का उल्लेख आश्चर्यजनक है: ''तब आराधनालय के सरदार क्रिसपुस[45] ने अपने सारे घराने समेत प्रभु पर विश्वास किया''[46] (आयत 8क)। मैं यह कल्पना नहीं कर सकता कि क्रिसपुस को मसीही बनने का कितना मोल चुकाना पड़ा, परन्तु आप में से कई लोग अनुमान लगा सकते हैं क्योंकि आपने भी वैसा ही क्रान्तिकारी आत्मिक परिवर्तन किया है! यदि पड़ोस के घर में पौलुस के जाने से यहूदी परेशान हो गए थे तो आराधनालय में शीर्ष व्यक्ति के कर्तव्य त्याग से अवश्य ही उनका सर्वनाश हो गया होगा।[47]

अन्त में यह ध्यान दिया जाना चाहिए कि मसीही बनने के लिए जो कुछ उसने किया,

उसके लिए वाक्यांश ''प्रभु पर विश्वास किया'' में सब कुछ कह दिया गया। 1 कुरिन्थियों 1:14 में पौलुस ने कहा कि क्रिसपुस का बपतिस्मा हुआ था (वास्तव में, उसने क्रिसपुस को अपने हाथों से बपतिस्मा दिया था)।

क्रिसपुस के मनपरिवर्तन के बारे में बताने के बाद, लूका ने कुरिन्थुस में पौलुस के प्रचार से सुसमाचार ग्रहण करने वालों के बारे में एक स्पष्ट वाक्य दिया: ''और बहुत से कुरिन्थी सुनकर[48] विश्वास लाए और बपतिस्मा लिया'' (आयत 8ख)। कुरिन्थियों का उद्धार बिल्कुल वैसे ही हुआ था जैसे प्रेरितों के काम की पुस्तक में दूसरे सभी लोगों का। यह भी सम्भव है कि विश्वास करके बपतिस्मा लेने वाले ''बहुत से'' लोगों में, स्तिफनास और उसका घराना भी था जिन्हें बाद में पौलुस ने ''अखया के पहिले फल'' कहा (1 कुरिन्थियों 16:15; 1 कुरिन्थियों 1:16 भी देखिए)।[49]

उत्साहित करने वाला आश्वासन (आयतें 9-11)

मैं एक बार फिर, कहता हूं कि कुरिन्थुस में पौलुस के आरम्भिक काम में लगातार जीत के बाद जीत मिलती दिखाई देती है। परन्तु, 9 और 10 आयतों से हमें पता चलता है कि पौलुस अभी भी नकारात्मक भावनाओं से जूझ रहा था। फिर, और भी बहुत सी बातें हो सकती हैं। हो सकता है कि पौलुस को यह चिन्ता हो कि मसीही बनने वाले लोगों को कुरिन्थुस के आकर्षक लोभ अपनी ओर फिर से मोहित न कर लें। बपतिस्मा लेने वाले प्रभावशाली लोगों के अहम को खत्म करना सचमुच थका देने वाला काम था। शायद वह भावनात्मक तौर पर कुरिन्थुस में आने से पहले ही इतना थक चुका था कि उसे फिर से शक्ति पाने में बहुत समय लग गया। आयत 10 से हम एक बात तो निश्चय ही जान सकते हैं कि पौलुस यहूदियों के अपरिहार्य दुर्व्यवहार से भयभीत था।

इसलिए परमेश्वर ने पौलुस को भय से मुक्ति पाने में उसकी सहायता के लिए एक अंतिम आशीष अर्थात यीशु की ओर से विशेष दर्शन और संदेश दिया। दमिश्क के मार्ग में, यीशु ने पौलुस से वायदा किया था कि वह उसे समय-समय पर दर्शन देता रहेगा (26:16)। यह उन विशेष मुलाकातों में से एक थी।[50]

> और प्रभु ने रात को दर्शन के द्वारा पौलुस से कहा, मत डर, वरन कहे जा, और चुप मत रह। क्योंकि मैं तेरे साथ हूं:[51] और कोई तुझ पर चढ़ाई करके तेरी हानि न करेगा; क्योंकि इस नगर में मेरे बहुत से लोग हैं (18:9, 10)

मैंने पहले सुझाव दिया था कि पौलुस अतीत, वर्तमान और भविष्य से अतिप्रभावित हुआ होगा; उसे दर्शन देने के समय यीशु ने इन तीनों की ओर ध्यान दिया। उसने अतीत को निकाल दिया: ''मत डर।'' उसने वर्तमान के लिए आश्वासन दिया: ''वरन कह जा, और चुप मत रह; क्योंकि मैं तेरे साथ हूं।'' उसने भविष्य के लिए महत्वपूर्ण प्रतिज्ञा की: ''कोई तुझ पर चढ़ाई करके तेरी हानि न करेगा; क्योंकि इस नगर में मेरे बहुत से लोग हैं।''

अगले पाठ में हम इस प्रतिज्ञा और इसके पूरे होने के बारे में और विस्तार से अध्ययन करेंगे। परन्तु, अभी मैं केवल इतना ही ध्यान दिलाता हूं कि स्वर्गीय दर्शन ने पौलुस में नया जोश भर दिया। वह कुरिन्थुस में डेढ़ वर्ष तक रहा, जो कि उसकी मिशनरी यात्राओं के दौरान किसी नगर में उसके काम करने का दूसरा सबसे लम्बा समय है:[52] "सो वह उनमें परमेश्वर का वचन सिखाते हुए डेढ़ वर्ष तक रहा" (आयत 11)। इस दौरान, पौलुस ने 1 और 2 थिस्सलुनीकियों लिखे।[53]

सारांश

कुरिन्थुस में पौलुस के आरम्भिक काम से बहुत से सबक लिए जा सकते हैं: (1) परमेश्वर के अच्छे से अच्छे सेवक भी कभी-कभी डर जाते हैं। पौलुस भी डर गया था। हमें अपने भीतर के डर को मानने में शर्म नहीं करनी चाहिए। (2) जब डर से हमारे मन भर जाते हैं, तो परमेश्वर हमें छोड़ता नहीं, बल्कि वह हमारी सहायता करने के लिए हमारे साथ रहता है! वह हमारी सहायता कुछ वैसे ही करता है जैसे उसने पौलुस की की थी अर्थात वह हमें उत्साह देने के लिए मित्र देता है, पुन: शक्ति देने के लिए काम देता है, चुनौतियों का सामना करने के लिए अवसर देता है और हमें स्थिर रखने के लिए प्रतिज्ञाएं देता है (रोमियों 8:28)। यीशु ने पौलुस से कहा, "मैं तुम्हारे साथ हूं"; वह हमें भी कहता है, "मैं सदैव तुम्हारे संग हूं" (मत्ती 28:20)। (3) डर लगने पर भी यदि हम परमेश्वर को नहीं छोड़ते, तो वह हमें आशीष देगा: उसने पौलुस को आशीष दी, और वह हमें भी आशीष देगा (2 तीमुथियुस 4:17, 18)।[54]

प्रवचन नोट्स

अपुल्लोस के अक्विला और प्रिस्किल्ला को इसमें या प्रवचन के सम्बन्ध में, (18:24-28) एक विशेष पाठ में दिखाया जा सकता है। ध्यान दें कि आमतौर पर अक्विला से पहले प्रिस्किल्ला का नाम आता है जिससे हमें पता चलता है कि वह अक्विला के लिए एक सहायक ही नहीं, बल्कि कंधे से कंधा मिलाकर उसके साथ काम भी करती थी। इस विलक्षण दम्पत्ति के बारे में और जानकारी रोमियों 16:3-5; 1 कुरिन्थियों 16:19; और 2 तीमुथियुस 4:19 में मिल सकती है।

पॉल रोजर्स ने मई 1985 के प्रीचर'ज़ पीरियोडिकल में प्रेरितों 18:9,10 पर पौलुस को यीशु के शब्दों पर एक रचनात्मक पाठ का इस्तेमाल किया: (1) "अब मत डर" (साधारण तौर पर पाए जाने वाले भय की बात करें)। (2) "वरन कहे जा, और चुप मत रह" (दूसरों को यीशु के विषय में बताने की आवश्यकता पर ज़ोर दें)। (3) "क्योंकि मैं तेरे साथ हूं, और कोई ... तेरी हानि न करेगा" (यीशु के हमारे साथ रहने और हमारी रक्षा करने के वायदे की बात करें [मत्ती 28:20; 2 थिस्सलुनीकियों 3:3; इत्यादि])।

पाद टिप्पपियां

[1]इस भाग के पृष्ठ 183 पर मानचित्र देखिए। नोट: हमें नहीं मालूम कि पौलुस थल मार्ग से गया या समुद्री मार्ग से। दोनों ही सम्भावनाएं हैं। [2]अपने क्षेत्र के विश्वविद्यालयीय नगर और फिर महानगर केन्द्र का उल्लेख करके आप उसे व्यक्तिगत बना लें। यहां आरकैन्सास में, मैं कह सकता हूं, ''फेयर विल्ले [यहां आरकैन्सास का विश्वविद्यालय है] से लिटल रॉक [आरकैन्सास की राजधानी और राज्य का सब से बड़ा नगर] जितना होगा।'' [3]पौलुस का एकमात्र सुरक्षित पत्र जो इससे पहले लिखा गया हो सकता है, गलतियों की पत्री है। [4]हमने पिछले पाठों में अतिरिक्त जानकारी के लिए गलतियों 1 और 2 का इस्तेमाल किया। [5]इस पाठ में 18:5 पर नोट्स देखिए। [6]उस समय कलीसिया की गिनती के अनुमान 2,00,000 से 5,00,000 तक पहुंचते हैं। [7]इस भाग के पृष्ठ 183 पर मानचित्र देखिए। हर दूसरे वर्ष कुरिन्थुस में पौराणिक देवता पोसेदोन के सम्मान में इसथमियान खेलें करवाई जाती थीं। इसथमियान खेलें अथेने में होने वाली ओलम्पिक खेलों के बाद दूसरे नम्बर पर थीं। इसलिए पौलुस ने कुरिन्थियों को लिखते समय खेलों से सम्बन्धित उदाहरणों का इस्तेमाल किया (ध्यान दें 1 कुरिन्थियों 9:24–27)। [8]पृष्ठ 77 पर 18:18 पर नोट्स देखिए। रोमियों 16:1 भी देखिए। [9]रोम को जाने वाले जहाज़ वहां से सामान ले भी आते थे। [10]नीरो के समय इसथमुस पर एक नहर का काम आरम्भ हुआ और 1893 में पूरा हुआ। आज भी उस नहर से छोटे जहाज़ जाते हैं।

[11]रोमी लोग इस देवी को वीनस कहते थे। [12]अक्रो-कुरिन्थ 1,886 फुट ऊंचा था (और है)। [13]ये ऐतिहासिक हवाले पौलुस के वहां जाने से पहले के समय की ओर संकेत करते हैं, परन्तु इसमें कोई संदेह नहीं कि उसके समय भी ऐसा ही होता था। ध्यान दें 1 कुरिन्थियों 6:15, 16क, 18क। [14]सत्रहवीं शताब्दी के अन्त में शेक्सपियर ने भी ''एक कुरिन्थी'' को शराबी आवारा के रूप में चित्रित किया। [15]कुरिन्थुस में बहुत से मन्दिरों में पार्थिनोन से एक सौ वर्ष पूर्व बना अपोलो का भव्य मन्दिर था। इसके मूल अठत्तीस खम्भों में से सात अभी भी खड़े हैं,जो अखंडित हैं। [16]पहला कुरिन्थियों 1:21 विशेषकर कुरिन्थियों की बात करता है, परन्तु यह अथेने के लोगों के लिए भी प्रासंगिक है। [17]''अक्विला'' एक रोमी नाम है जिसका अर्थ है ''उकाब''। [18]केवल अक्विला को ही विशेष तौर पर ''एक यहूदी'' कहा गया, इसलिए कई लोगों का अनुमान है कि प्रिस्किल्ला गैर-यहूदी थी; परन्तु, सम्भवत: वह भी, यहूदी थी। [19]पुन्तुस उत्तरी एशिया माइनर में एक रोमी इलाका था (इस भाग के पृष्ठ 183 पर मानचित्र देखिए)। पिन्तेकुस्त के दिन पुन्तुस के यहूदी भी वहां थे (प्रेरितों 2:9)। किसी समय वहां पर कलीसिया स्थापित हुई थी (1 पतरस 1:1)। [20]क्लौदियुस का उल्लेख पहले प्रेरितों 11:28 में आया था। क्लौदियुस एकमात्र ऐसा शासक है, जिसका नाम नये नियम में दो बार आया।

[21]सम्भवत: अक्विला और प्रिस्किल्ला कुरिन्थुस में पौलुस के आने से कुछ देर पहले ही पहुंचे थे। [22]''ख्रेस्तुस'' और ''ख्रिस्तुस'' का उच्चारण एक जैसा लगता है। साहित्य के बहुत से कामों में, लेखक लिखारी से लिखवाता था जिसे हिन्दी की बाइबल में ग्रंथी कहा गया है। [23]निश्चय ही, मसीही यहूदियों को निकाला गया होगा। कई लोगों का मानना है कि इब्रानियों की पुस्तक रोम में यहूदी मसीहियों के एक गुट के लिए लिखी गई थी और यह कि इब्रानियों 10:32–34 इस निकाले जाने के बारे में बताती है, जिसने उन लोगों को प्रभावित किया होगा। [24]यदि ऐसा है, तो लूका ने सम्भवत: इस तथ्य का उल्लेख यह बताने के लिए किया कि अक्विला एक यहूदी था और उसे व प्रिस्किल्ला को रोम से निकाल दिया गया था। [25]'बिरादरी' एक ही उद्यम से जुड़े लोगों के संगठन को कहा जाता था, जो कर्मचारी संघों की तरह होता था। [26]''प्रिस्किल्ला'' को ''प्रिसका'' भी कहा जाता था (ध्यान दें 1 कुरिन्थियों 16:19; 2 तीमुथियुस 4:19)। [27]जिस समय पौलुस ने यह लिखा, अक्विला और प्रिस्किल्ला वापस रोम में चले गए थे। बाइबल से बाहर के कुछ लेखक संकेत देते हैं कि रोम से यहूदियों का देश निकाला केवल दो वर्ष तक रहा। [28]उन दिनों एक रब्बी के लिए किसी और उद्यम को सीखना और करना आम बात थी। यहूदियों का विश्वास था कि लोग इससे रब्बी जीवन की वास्तविकताओं से जुड़े रहते हैं। [29]शायद पौलुस के पिता ने

उसे तम्बू बनाना सिखाया था; उस समय आमतौर पर पुत्र अपने पिता के उद्यम को ही अपनाते थे।[30]पौलुस जहां भी प्रचार करने जाता वहां वह मुख्यत: अपने निर्वाह के लिए उनसे वेतन नहीं लेता था (प्रेरितों 20:34; 1 कुरिन्थियों 9:1–18; 2 कुरिन्थियों 11:7–9; फिलिप्पियों 4:15–17; 1 थिस्सलुनीकियों 2:9; 4:11; 2 थिस्सलुनीकियों 3:8)। तथापि, जैसा कि हम देखेंगे, कि उसने अन्य मण्डलियों से कुछ सहायता स्वीकार की। फिर पौलुस ने ज़ोर दिया कि एक प्रचारक के लिए यह सही है कि जहां वह प्रचार करे, वहां के लोग उसका खर्च उठाएं (1 कुरिन्थियों 9:1–18)। जैसे इस पाठ में ध्यान दिया गया, कि आलोचना से बचने के लिए पौलुस ने अपने इस अधिकार को त्याग दिया, परन्तु उसके शत्रुओं ने बाद में इस बात के लिए भी उसकी आलोचना की (2 कुरिन्थियों 11:7–9)। शायद उन्होंने यह कहा कि उसने वेतन इसलिए स्वीकार नहीं किया होगा क्योंकि उसे पता था कि वह इसके योग्य नहीं है! हमें आलोचना से बचने की कोशिश करनी चाहिए, परन्तु यदि लोगों ने दोष निकालने की ठानी हो, तो वे हमारी आलोचना करने के लिए हम में *कोई न कोई* गलती निकाल ही देंगे।

[31]बाद में, अन्य नगरों में, कलीसिया अक्विला और प्रिस्किल्ला के घर में इकट्ठी होती थी (रोमियों 16:3–5; 1 कुरिन्थियों 16:19)।[32]पत्थर पर पुनर्निर्मित खुदाई है "इब्रानियों का आराधनालय।" इसकी तिथि 100 ई.पू. से 200 ई. पू. तक बताई जाती है। यह पत्थर लिकयुम जाने वाले मार्ग के पास मिला था।[33]सम्भव है कि पौलुस ने बिरीया में तीमुथियुस के लिए संदेश भेजा कि वह अथेने में आने के बजाय थिस्सलुनीके में लौट जाए। परन्तु, 1 थिस्सलुनीकियों 3:1, 2 की अधिक स्वाभाविक व्याख्या है कि तीमुथियुस अथेने में आया जैसा कि उसे कहा गया था और फिर उसे थिस्सलुनीके में वापस भेज दिया गया।[34]यह सम्भवत: इस तथ्य पर आधारित है कि सीलास और तीमुथियुस सम्भवत: फिलिप्पी की कलीसिया से कुछ चन्दा लेकर आए (पाठ में अगले नोट्स देखिये)। तीमुथियुस थिस्सलुनीके से आया, इसलिए यह मानना ही तर्कसंगत है कि सीलास फिलिप्पी से आया और यह कि पौलुस ने उसे यह देखने के लिए भेजा कि वहां पर भाइयों का क्या हाल है, जैसे उसने थिस्सलुनीके में तीमुथियुस को भेजा था।[35]क्योंकि पहली बार मकिदुनिया से कूच करते समय केवल फिलिप्पी के मसीहियों ने ही पौलुस की सहायता की थी (फिलिप्पियों 4:15, 16), और क्योंकि स्पष्ट तौर पर सीलास और तीमुथियुस मकिदुनिया से सहायता लेकर आए थे (2 कुरिन्थियों 11:9), इसलिए वह सहायता अवश्य ही फिलिप्पी से आई होगी।[36]यदि वाक्यांश "भाइयों" सीलास और तीमुथियुस के लिए नहीं है, तो किसके लिए है, हमें नहीं मालूम।[37]इसका अर्थ यह हो सकता है कि परमेश्वर के वचन ने (यिर्मयाह की हड्डियों में आग की तरह) पौलुस को दृढ़ता से बोलने पर बाध्य किया था। बहुत से अनुवादकों और टीकाकारों का मानना है कि मकिदुनिया से आए उपहार ने पौलुस को प्रचार करने के लिए हिम्मत दी, क्योंकि अब हर रोज़ अपने हाथों से काम करने की आवश्यकता नहीं थी (कम से कम थोड़ी देर के लिए)।[38]कुरिन्थुस में पौलुस के मूल संदेश के विस्तार के लिए, देखिए 1 कुरिन्थियों 1:18–25; 2:2; 15:1–8. [39]एक बार फिर, पौलुस के कथन का कि वह उस समय से अन्यजातियों में जाएगा, केवल स्थानीय महत्व ही था। उसने अवसर मिलने पर यहूदियों में प्रचार करना जारी रखा (आयत 19)।[40]"प्रेरितों के काम, भाग-3" में पृष्ठ 83 पर 13:50, 51 पर नोट्स देखिए। पुराने नियम के एक ऐसे ही उदाहरण के लिए, देखिए नहेमायाह 5:13.

[41]प्रेरितों के काम पुस्तक में "परमेश्वर के भक्त" शब्द आमतौर पर परमेश्वर का भय रखने वालों के लिए प्रयुक्त हुए हैं। सम्भवत: तितुस युसतुस मसीही बन गया; यह नहीं पता वह पौलुस को अपने घर बुलाने से पहले मसीही बना था या बाद में।[42]कई लोगों का अनुमान है कि यह तितुस वही व्यक्ति था जो बाद में पौलुस का सहयात्री बन गया (तीतुस 1:4, 5), परन्तु इसकी सम्भावना नहीं लगती।[43]इसका अर्थ यह नहीं है कि पौलुस ने तितुस युसतुस के घर रहने के लिए अक्विला और प्रिस्किल्ला का घर छोड़ दिया। तितुस युसतुस का घर यीशु के बारे में और अधिक जानने की इच्छा रखने वालों को सिखाने के लिए इस्तेमाल किया जाता था।[44]रोमी लोगों के तीन नाम होना आम था।[45]आराधनालय का अगुआ वहां पर दी जाने वाली सहूलियतों तथा सेवाओं के लिए ज़िम्मेदार होता था (ध्यान दें 13:15)। यह सम्भव है

कि कुरिन्थुस के आराधनालय में एक से अधिक शासक थे (जैसे 13:15 में)। उनमें से एक क्रिसपुस और दूसरा सोस्थिनेस होगा (18:17)। तथापि, यह अधिक सम्भव लगता है कि जब क्रिसपुस मसीही बना तो सोस्थिनेस को अगुआ नियुक्त कर दिया गया।[46]प्रेरितों के काम पुस्तक में, हमने तीसरी जगह किसी ''घराने के मनपरिवर्तन'' के विषय में पढ़ा है। ''प्रेरितों के काम, भाग-3'' में 16:15 पर सम्बन्धित नोट्स देखिए। [47]अगले पाठ में 18:12-17 का अध्ययन करते समय इसे ध्यान में रखें। [48]उद्धार के निमित्त परमेश्वर की शर्तों का एक महत्वपूर्ण भाग सुसमाचार को सुनना है (रोमियों 10:17)। [49]पृष्ठ 53 पर 17:34 पर नोट्स देखिए। मेरा मानना है कि स्तिफनास और उसके घराने का बपतिस्मा अथेने में नहीं बल्कि कुरिन्थुस में हुआ था, और यह कि वाक्यांश ''अखया के पहिले फल'' को ''कुरिन्थुस के सम्बन्ध में'' पढ़ा जाना चाहिए। [50]पौलुस को यीशु के और दर्शन प्रेरितों 9:1-6; 22:17, 18; 23:11; 27:23-25; 2 तीमुथियुस 4:16, 17 में लिखे मिलते हैं।

[51]यशायाह 43:5 भी देखिए। [52]वह इफिसुस में अधिक देर तक रहा (प्रेरितों 19:10)। [53]पहला थिस्सलुनीकियों कुरिन्थुस में तीमुथियुस द्वारा पौलुस को उनकी बातें बताने के थोड़ी देर बाद लिखा गया (1 थिस्सलुनीकियों 3:6)। फिर तीमुथियुस को वह पत्र देकर थिस्सलुनीके भेजा गया। उसके लौटने पर पौलुस ने उसके बाद अगला पत्र लिखा। दूसरा पत्र भी लगभग निश्चित रूप से कुरिन्थुस में ही लिखा गया (ध्यान दें कि 2 थिस्सलुनीकियों की पहली आयत में सीलास का उल्लेख है; प्रेरितों के काम में सीलास का उल्लेख अन्तिम बार कुरिन्थुस में ही आया है [प्रेरितों 18:5])। [54]यदि इस पाठ को प्रवचन के रूप में इस्तेमाल किया जाता है, तो निमन्त्रण में क्रिसपुस के मनपरिवर्तन की ओर ध्यान दिलाया जा सकता है। मसीह के लिए निर्णय करना उसके लिए बहुत महंगा था, परन्तु यह सही निर्णय था। सुनने वालों को चुनौती दी जानी चाहिए कि वे क्रिसपुस की तरह निर्णय लें, चाहे वह कितना ही महंगा क्यों न पड़े।

उस समय और आज की मूर्तिपूजा

अथेने के लोगों की मूर्तिपूजा से पौलुस ''चिढ़'' गया था। बचपन से उसे पुराने नियम के निर्गमन 20:4, 5; यशायाह 44:9-20; यिर्मयाह 10:3-5 जैसे पदों की शिक्षा मिली थी। नया नियम भी मूर्तिपूजा की निंदा करता है (1 कुरिन्थियों 10:4; आदि)। कई लोग जो धार्मिक मूर्तियां बनाने के लिए उत्साहित करते हैं वे वही बात करते हैं जिसमें वे अपने आप को मूर्तिपूजकों से अलग मानते हैं। ''हम मूर्ति की पूजा थोड़े ही करते हैं,'' वे कहते हैं, ''हम तो उसकी आराधना करते हैं जिसकी यह मूर्ति है।'' परन्तु, पहली शताब्दी और आज की मूर्तिपूजा में बहुत कम अन्तर है। पहली शताब्दी में, जागृत मूर्तिपूजकों का मानना था कि मूर्ति से केवल उस देवता का पता चलता है जिसकी वे पूजा करते थे, जबकि अज्ञानी मूर्तिपूजक उसे केवल मूर्ति समझकर ही पूजा करते थे। आज भी, कोई जागृत व्यक्ति कह सकता है कि मूर्ति से तो केवल यह पता चलता है कि यह यीशु (या मरियम या किसी संत) की है, जबकि अज्ञानी तथा अंधविश्वासी लोग तो उसकी उपासना एक मूर्ति समझकर ही करेंगे। ''हे बालको, अपने आपको मूरतों से बचाये रखो'' (1 यूहन्ना 5:21)।